Munisuvrat Nath Chalisa PDF

|| श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा ||

अरिहंत सिद्ध आचार्य को करुं प्रणाम ।
उपाध्याय सर्वसाधू करते स्वपर कल्याण ||

जिनधर्म, जिनागम, जिनमंदिर पवित्र धाम ।
वीतराग की प्रतिमा को कोटि-कोटि प्रणाम ||

जय मुनिसुव्रत दया के सागर । नाम प्रभु का लोक उजागर ||1|

सुमित्रा राजा के तुम नन्दा । मां शामा की आंखो के चन्दा ||2|

श्यामवर्ण मूरत प्रभू की प्यारी । गुणगान करें निशदिन नर नारी ||3|

मुनिसुव्रत जिन हो अन्तरयामी । श्रद्धा भाव सहित तुम्हें प्रणामी ||4|

भक्ति आपकी जो निशदिन करता । पाप ताप भय संकट-हरता ||5|

प्रभू ; संकटमोचन नाम तुम्हारा । दीन दुखी जीवों का सहारा ||6|

कोई दरिद्री या तन का रोगी । प्रभू दर्शन से होते हैं निरोगी ||7|

मिथ्या तिमिर भयो अति भारी । भव भव की बाधा हरो हमारी ||8|

यह संसार महा दुख दाई । सुख नहीं यहां दुख की खाई ||9|

मोह जाल में फंसा है बंदा । काटो प्रभु भव भव का फंदा ||10|

रोग शोक भय व्याधि मिटावो । भव सागर से पार लगावो ||11|

घिरा कर्म से चौरासी भटका । मोह माया बन्धन में अटका ||12|

संयोग-वियोग भव भव का नाता । राग द्वेष जग में भटकाता ||13|

हित मित प्रित प्रभू की वाणी । स्वपर कल्याण करें मुनि ध्यानी ||14|

भव सागर बीच नाव हमारी । प्रभु पार करो यह विरद तिहारी ||15|

मन विवेक मेरा अब जागा । प्रभु दर्शन से कर्ममल भागा ||16|

नाम आपका जपे जो भाई । लोका लोक सुख सम्पदा पाई ||17|

कृपा दृष्टी जब आपकी होवे । धन आरोग्य सुख समृधि पावे ||18|

प्रभु चरणन में जो जो आवे । श्रद्धा भक्ति फल वांच्छित पावे ||19|

प्रभु आपका चमत्कार है न्यारा । संकट मोचन प्रभु नाम तुम्हारा ||20|

सर्वज्ञ अनंत चतुष्टय के धारी । मन वच तन वंदना हमारी ||21|

सम्मेद शिखर से मोक्ष सिधारे । उद्धार करो मैं शरण तिहारे ||22|

महाराष्ट्र का पैठण तीर्थ । सुप्रसिद्ध यह अतिशय क्षेत्र ।।23।

मनोज्ञ मन्दिर बना है भारी । वीतराग की प्रतिमा सुखकारी ।।24।

चतुर्थ कालीन मूर्ति है निराली । मुनिसुव्रत प्रभू की छवि है प्यारी ।।25।

मानस्तंभ उत्तग की शोभा न्यारी । देखत गलत मान कषाय भारी ।।26।

मुनिसुव्रत शनिग्रह अधिष्ठाता । दुख संकट हरे देवे सुख साता ।।27।

शनि अमावस की महिमा भारी । दूर-दूर से आते नर नारी ।।28।

मुनिसुव्रत दर्शन महा हितकारी । मन वच तन वंदना हमारी ।।29।

सोरठा

सम्यक् श्रद्धा से चालीसा, चालीस दिन पढिये नर-नार ।

मुक्ति पथ के राही बन, भक्ति से होवे भव पार ।।